NAME OF THE COLLEGIE – Godda college, Godda

SL NO	DATE	NAME OF THE TEACHER	SUBJECT	SEM	TOPIC	MODE ADOPTED
01	17.04.2020	Md Mahtab Ahmad	TG-201	B.Ed Sem-02	IMAGINATION	Pdf

M.M. Ahmad
Dept of Education
Godda college, Godda

Scanned by CamScanner

कल्पना का अर्थ व परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF IMAGINATION)

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि हमारे अधिकांश अनुभव कल्पना से प्रभावित होते रहते हैं। प्रायः हम यह कहते हैं कि अमुक व्यक्ति बड़ी काल्पनिक बातें करता है। अमुक कवि की कल्पनाएँ उच्च कोटि की हैं अथवा वह व्यक्ति सदा कल्पना के लोक में रहता है। प्रश्न यह उठता है कि आखिर कल्पना क्या है ?

कल्पना दो अर्थों में प्रयुक्त होती है—इसका एक अर्थ बड़ा व्यापक है और दूसरा पर्याप्त संकुचित। व्यापक अर्थ में कल्पना हमारे सभी चेतन अनुभवों में काम करती रहती है। इस अर्थ के अनुसार कल्पना के बिना संवेदना और प्रत्यक्षीकरण भी सम्भव नहीं है। जब हमारे सामने उद्दीपक अनुपस्थित हो तो उस उद्दीपक के विषय में जो कुछ भी विचार हमारे मन में आएँ उसे हम व्यापक अर्थ में कल्पना कह देते हैं। कल्पना का संकुचित अर्थ नवीनता की सृष्टि से लिया जाता है। अपने पुराने अनुभवों के सहारे हम किसी नवीन विचार की रचना करते हैं। नई रचना मन की रचनात्मक क्रिया का फल है। यह रचनात्मक क्रिया कल्पना कही जाती है। पुराने अनुभव यदि हमारे मन में ज्यों के त्यों उपस्थित हो जायें तो वह कल्पना नहीं होगी। कल्पना में पुराने अनुभवों की नींव पर विचारों की नई इमारत खड़ी की जाती है। यह नई इमारत देश और काल से परे होती है।

कल्पना प्रतिमा के आधार पर ही बनती है। स्मृति के सहारे हम मन में प्रतिमाओं को बुलाते हैं और उन प्रतिमाओं को एक नये ढंग से सम्बन्धित करके, उनमें एक नया संगठन लाकर उनके आधार पर एक नया क्रम उपस्थित कर देते हैं। कोई कहीं की प्रतिमा है तो कोई कहीं और स्थल की। एक प्रतिमा आज की है तो एक वर्षों पुरानी। इनके आधार पर एक नई रचना प्रस्तुत कर दी जाती है। यह नई रचना कल्पना ही है। कल्पना की इमारत प्रतिमा के ईंट-गारे पर ही आधारित है।

मानव सभ्यता के विकास में कल्पना का विशेष महत्त्व रहा है। कल्पना द्वारा ही मनुष्य ने निर्माण किया है, विकास किया है। नवीन आविष्कार, साहित्य सृजन, नवनिर्माण आदि सभी कल्पना की देन हैं।

जिस वस्तु को हम जिस प्रकार छूते, देखते या सुनते हैं, उसी प्रकार वह हमारे मन के पर्दे पर चिन्हित हो जाती है। यदि हम किसी सुन्दर मकान को देख चुके हैं, तो उसकी छाप हमारे

Scanned by CamScanner

मस्तिष्क में मौजूद रहती है। कुछ समय के बाद हमें उस मकान की याद आती है। तत्काल ही हम उसका चित्र अपने मस्तिष्क में देखते हैं। इसी चित्र को प्रतिमा (Image) कहते हैं। यह प्रतिमा हमें उस मकान की सब बातों का उसी प्रकार स्मरण कराती है, जिस प्रकार हम उसको देख चुके हैं।

कभी-कभी हम उस मकान के आधार पर एक नये मकान का निर्माण करने लगते हैं। यह मकान उससे कहीं सुन्दर और आलीशान है। ऐसा मकान कहीं है ही नहीं। यह तो केवल हमारे विचारों की उपज है। अप्रत्यक्ष बातों के सम्बन्ध में इस प्रकार विचार करने को ही **'कल्पना'** कहते हैं। दूसरे शब्दों में, **कल्पना एक चेतन और आश्चर्यजनक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें हम अपने पिछले अनुभव के आधार पर किसी नई वस्तु का निर्माण करते हैं।**

'कल्पना' का अर्थ और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं; यथा—

1. मैक्डूगल—''हम कल्पना या कल्पना करने की उचित परिभाषा अप्रत्यक्ष बातों के सम्बन्ध में विचार करने के रूप में कर सकते हैं।''

"We may properly define imagination or imagining as thinking of remote objects."
—**McDougall** : *An Outline of Psychology*, p. 284.

2. डमविल—''मनोविज्ञान में 'कल्पना' शब्द का प्रयोग सब प्रकार की प्रतिमाओं के निर्माण को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है।''

"The word 'imagination' may be used in psychology to designate all production of images." —**Dumville** (p. 88)

3. रायबर्न—''कल्पना वह शक्ति है, जिसके द्वारा हम अपनी प्रतिमाओं का नए प्रकार से प्रयोग करते हैं। यह हमको अपने पिछले अनुभव को किसी ऐसी वस्तु का निर्माण करने में सहायता देती है, जो पहले कभी नहीं थी।''

"Imagination is the power to use our images in a new way, it is using our past experience to create something new which has not existed before." —**Ryburn** (p. 253)

4. बोआज—"कल्पना वास्तविक इन्द्रिय उत्तेजना के अभाव में ज्ञानात्मक अनुभव है जो प्रत्यक्ष से सम्बन्धित है।"

इसीलिए वुडवर्थ ने कल्पना को मानसिक प्रहस्तन माना है।

Scanned by CamScanner

कल्पना की शिक्षा में उपयोगिता
(UTILITY OF IMAGINATION IN EDUCATION)

बी. एन. झा के अनुसार—**''विद्यालय-कार्य का उद्देश्य न केवल बालकों की कल्पना का विकास करना, वरन् उसे उचित दिशा प्रदान करना भी होना चाहिए।''**

"It should be the aim of school work not only to develop imagination, but also to give it the right direction." —**Jha** (p. 317)

उक्त कथन से बालकों की शिक्षा में कल्पना की उपयोगिता पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस उपयोगिता के पक्ष में निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

1. कल्पना, बालक को वर्तमान अनुभवों की सीमा को पार करने की शक्ति देती है।
2. कल्पना, बालक को सुदूर देशों के लोगों से सम्पर्क स्थापित करने की योग्यता प्रदान करती है।
3. कल्पना, बालक को ज्ञान का अर्जन करने के लिए प्रोत्साहित करके उसका मानसिक विकास करती है।
4. कल्पना, बालक को अपनी अतृप्त इच्छाओं और अभिलाषाओं को पूर्ण करने का अवसर देती है।
5. कल्पना, बालक को अपनी रचनात्मक शक्ति का विकास करने में योग देती है।
6. **भाटिया** (Bhatia) के अनुसार—कल्पना, बालक को उसके कार्यों का परिणाम बताकर उसका पथ-प्रदर्शन करती है।
7. **रायबर्न** (Ryburn) के अनुसार—कल्पना, बालक में दुःख की घड़ियों में सुख की प्रतिमायें उपस्थित करके उसे प्रसन्नता प्रदान करती है।
8. कल्पना, बालक को अपने को दूसरे व्यक्तियों की स्थितियों में रखने में सहायता देकर उनके सुखों और दुःखों से परिचित कराती है।
9. कल्पना, बालक में उसके भावी जीवन का चित्र प्रस्तुत करके, उसे उस जीवन के लिए तैयारी करने में सहयोग प्रदान करती है।
10. **रायबर्न** (Ryburn) के अनुसार—कल्पना, बालक के समक्ष श्रेष्ठ व्यक्तियों के कार्यों और आदर्शों के चित्र उपस्थित करके उसका नैतिक और चारित्रिक विकास करती है।
11. **रायबर्न** (Ryburn) के अनुसार—कल्पना, बालक को विभिन्न प्रकार की सामूहिक और सामाजिक योजनाओं को पूर्ण करने में सहायता देकर उसका सामाजिक विकास करती है।
12. **वुडवर्थ** (Woodworth, p. 150) के अनुसार—कल्पना, बालक की रुचियों, प्रवृत्तियों, इच्छाओं, योग्यताओं आदि को प्रकट करती है। कुशल शिक्षक इनका ज्ञान प्राप्त करके और बालक की कल्पना को उचित दिशा प्रदान करके, उसके संसार को सुखमय बना सकता है। **मोर्स व विंगो** का कथन है—**"कल्पना, व्यक्ति को अपने संसार को व्यवस्था और आनन्द के नवीन संसार में परिवर्तित करने की क्षमता देती है।"**

Scanned by CamScanner